

के कारण या आकस्मिक रूप से या किसी विशेष उद्देश्य से होती हैं।

○ भारतीय वन सर्वेक्षण (FSI) की रिपोर्ट भी दर्शाती है कि भारत में भी वनाग्नि की तकरीबन 95 प्रतिशत घटनाएँ मानवीय कारणों से प्रेरित होती हैं।

■ उच्च तापमान, हवा की गति और दशा तथा मट्टि एवं वातावरण में नमी आदि कारक वनाग्नि को और अधिक भीषण रूप धारण करने में मदद करते हैं।

वनाग्नि के प्रभाव

- जंगलों में लगने वाली आग के कारण उस क्षेत्र वशिष्ट की प्राकृतिक संपदा और संसाधन को काफी नुकसान का सामना करना पड़ता है।
- वनाग्नि के कारण जानवरों के रहने का स्थान नष्ट हो जाता है, जिसके कारण नए स्थान की खोज में वे शहरों की ओर जाते हैं और शहरों की संपत्तिको नुकसान पहुँचाते हैं।
- अमेज़न जैसे बड़े जंगलों में वनाग्नि के कारण जैव विविधता और पौधों तथा जानवरों के विलुप्त होने का खतरा बढ़ जाता है।
- जंगलों में लगने वाली आग न केवल जंगलों को तबाह करती है, बल्कि इसके कारण मानवीय जीवन और मानवीय संपत्तिको भी काफी नुकसान होता है।
- वनाग्नि के प्रभावस्वरूप वनों की मट्टि में मौजूद पोषक तत्वों में भारी कमी देखने को मिलती है, जनिहें वापस प्राप्त करने में काफी लंबा समय लगता है।
- चूँकि वनाग्नि की अधिकांश घटनाएँ काफी व्यापक पैमाने पर होती हैं, इसलिये इनके कारण आस-पास के तापमान में काफी वृद्धि होती है।

वनाग्नि का सकारात्मक पक्ष

- विश्लेषकों का मत है कि वनाग्नि जंगलों में पाई जाने वाली कई प्रजातियों नषिक्रयि बीजों को पुनर्जीवित करने में मदद करती है।
- कई अध्ययनों में सामने आया है कि वनाग्नि के कारण जंगलों में पाई जाने वाली अधिकांश आक्रामक प्रजातियाँ नष्ट हो जाती हैं। उदाहरण के लिये कुछ समय पूर्व कर्नाटक में आदवासी समुदायों ने प्रचलित 'कूड़े में लगाई जाने वाली आग' की परंपरा का बहिष्कार कर दिया था, जिसके कारण क्षेत्र वशिष्ट में लैंटाना (Lantana) प्रजाति की वनस्पति इतनी ज़्यादा बढ़ गई कि उसने वहाँ के स्थानिक पौधों का अतिक्रमण कर लिया था।

नषिक्रय

समय के साथ वनाग्नि से संबंधित घटनाएँ वैश्विक स्तर पर एक गंभीर चिंता का रूप धारण करती जा रही हैं, भारत में भी लगातार बढ़ रही वनाग्नि की घटनाओं ने नीति निर्माताओं को पर्यावरण संरक्षण, आपदा प्रबंधन और वन्य जीवों तथा वन्य संपदा के संरक्षण की दशा में वमिर्श करने हेतु वविश किया है। आवश्यक है कि देश में वनाग्नि प्रबंधन के लिये वभिन्न नवीन वचिारों की खोज की जाए, इस संबंध में वनाग्नि प्रबंधन को लेकर वभिन्न देशों द्वारा अपनाए जा रहे मॉडल की समीक्षा की जा सकती है और उन्हें भारतीय परस्थितियों के अनुकूल परिवर्तित किया जा सकता है।

स्रोत: टाइम्स ऑफ इंडिया

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/concern-for-forestry-holistic-analysis>